अध्याय

10

आओ, मिलकर बचाएँ

निर्मला पुतुल

© JCERT not to be republished

1 जीवन परिचय—

जन्म — 6 मार्च सन् 1972 ई . दुधानी, कुरुवा गाँव, दुमका, संथाल परगना, दुमका, झारखण्ड

पिता — सिरील मुरमू,

माता — कान्दिनी हाँसदा

शिक्षा — राजनीतिशास्त्र में ऑनर्स, नर्सिंग में डिप्लोमा

2 साहित्यिक परिचय

नगाड़े की तरह बजते शब्द

अपने घर की तलाश में

3 बहुचर्चित संथाली लेखिका, कवयित्री, सोशल एक्टिविस्ट

4 आदिवासी महिलाओं का विस्थापन, पलायन, उत्पीड़न, स्वास्थ्य, शिक्षा, जेन्डर संवेदनशीलता, मानवाधिकार एवं सम्पत्ति पर अधिकार

5 इनकी कविताओं का अनुवाद अंग्रेजी, मराठी, उर्दू, उड़िया, कन्नड़, नागपुरी, पंजाबी एवं नेपाली में हो चुका है।

6 संथाली, हिंदी, नागपुरी, बांग्ला, खोरठा, भोजपुरी, अंगिका एवं अंग्रेजी भाषा की जानकार

7 जीवन रेखा ट्रस्ट, संताल परगना (झारखंड) की संस्थापक- सचिव झारखंड नेशनल एलायंस ऑफ वीमेन, संताल परगना (झारखंड) झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा (झारखंड) जन संस्कृति मंच, उपाध्यक्ष, केन्द्रीय समिति, दिल्ली

8 सम्मान

- साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा 'साहित्य सम्मान' 2001 में
- झारखंड सरकार द्वारा 'राजकीय सम्मान', 2006 में
- झारखंड सरकार के कला-संस्कृति, खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत, 2006 में
- हिन्दी साहित्य परिषद्, मैथन द्वारा सम्मानित, 2006 में
- 'मुकुट बिहारी सरोज स्मृति सम्मान', ग्वालियर द्वारा, 2006 में
- 'भारत आदिवासी सम्मान', मिजोरम सरकार द्वारा 2006 में
- 'विनोबा भावे सम्मान' नगरी लिपि परिषद्, दिल्ली द्वारा 2006 में
- 'हेराल्ड सैमसन टोपनो स्मृति सम्मान', झारखण्ड, 2006 में,
- 'बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान', बिहार, 2007 में
- 'शिला सिद्धान्तकर स्मृति सम्मान', नई दिल्ली, 2008 में
- महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित, 2008 में

© JCERT not to be republished

- हिमाचल प्रदेश हिन्दी साहित्य अकादमी, द्वारा सम्मानित, 2008 में
- 'राष्ट्रीय युवा पुरस्कार', भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता द्वारा, 2009 में

कविता परिचय

1 प्रस्तुत कविता 'आओ मिलकर बचाएँ ' कवयित्री निर्मला पुतुल जी के द्वारा रचित है ।

2 यह कविता मूलत: संथाली भाषा में लिखित है, जिसका हिन्दी अनुवाद श्री अशोक सिंह ने किया है ।

3 कवयित्री के मुताबिक प्रकृति के विनाश और विस्थापन के कारण आज आदिवासी समाज संकट में है ।

4 प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवयित्री उन चीज़ों की सुरक्षा की बात कर रही हैं, जिनका होना स्वस्थ सामाजिक-प्राकृतिक परिवेश के लिए आवश्यक है ।

5 यदि संथाल समाज की बात करें, तो संथाल समाज में जहाँ एक तरफ़ सादगी, भोलापन, प्रकृति के प्रति झुकाव और कठोर व अत्यधिक परिश्रम करने की क्षमता जैसे सकारात्मक तत्व निहित हैं, तो वहीं दूसरी तरफ़ संथाल समाज में अशिक्षा, कुरीतियाँ और मादक पदार्थों की ओर लोगों का झुकाव भी शामिल है। प्रस्तुत कविता में उक्त दोनों पक्षों का यथार्थ चित्रण किया गया है।

6 शब्दों का लाक्षणिक प्रयोग किया गया है।

7 कविता में प्रयुक्त शब्द प्रतीकात्मक हैं।

8 प्रेरणात्मक पंक्तियाँ प्रयुक्त हुई हैं, जिसे पढ़ने पर आगे बढ़ने का आत्मबल मिलता है।

काव्यांश 1

अपनी बस्तियों को

नंगी होने से

शहर की आबो-हवा से बचाएँ उसे

बचाएँ डूबने से

पूरी की पूरी बस्ती को

हड़िया में

अपने चेहरे पर

संथाल परगना की माटी का रंग

भाषा में झारखंडीपन

शब्दार्थ :-

नंगी होना – मर्यादाहीन होना

आबो-हवा – वातावरण, जलवायु

हड़िया – हड्डियों का भंडार

माटी – मिट्टी

झारखंडीपन – झारखंड का प्रभाव

प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक ' आरोह ' भाग -1 में संकलित 'आओ मिलकर बचाएँ ' शीर्षक कविता से ली गई है। कवयित्री निर्मला पुतुल जी के द्वारा रचित कविता

© JCERT not to be republished

'आओ मिलकर बचाएँ ' मूलतः संथाली भाषा में लिखित है, जिसका हिन्दी अनुवाद श्री अशोक सिंह ने किया है। कवयित्री निर्मला पुतुल जी उक्त पंक्तियों के माध्यम से अपने साधारण ग्राम्य परिवेश को दोष रूपी शहरी सभ्यता से बचाने का आह्वान् कर रही हैं।

व्याख्या— कवयित्री कहती हैं कि आओ, हम सब मिलकर अपनी बस्तियों को शहरी वातावरण के प्रभाव से बचा लें तथा अपनी संस्कृति को सुरक्षित कर लें। अर्थात् आज तक शहरी सभ्यता ने सिर्फ हमारी बस्तियों पर विभिन्न प्रकार का शोषण किया है। आगे कवयित्री कहती हैं कि हमें अपनी बस्ती को डूबने से बचाना है अर्थात् विनाश, विस्थापन और शोषण से बचाना है। वरना पूरी की पूरी बस्ती हड्डियों के ढेर तले तबाह हो जाएगी। हमारे चेहरे पर संथाल परगने की मिट्टी के रंग का एहसास और अपनी भाषा में झारखंडीपन अर्थात् बनावटी अभिव्यक्ति न अपनाकर झारखंड की भाषा या बोली, जो बचपन से हमारे व्यवहार या संचार का माध्यम रही है, उसका प्रभाव हम पर होना चाहिए।

विशेष—

- **बस्तियों को शहरी वातावरण के प्रभाव से बचाने का आह्वान**
- **प्राकृतिक वातावरण एवं संस्कृति को बचाने का आह्वान**
- **झारखंडी भाषाओं का संरक्षण**
- **अपनी माटी से लगाव**

काव्यांश 2

ठंडी होती दिनचर्या में

जीवन की गर्माहट

मन का हरापन

भोलापन दिल का

अक्खड़पन, जुझारूपन भी

शब्दार्थ:-

ठंडी होती – धीमी पड़ती

दिनचर्या – दैनिक कार्य

गर्माहट – उत्साह, उमंग

मन का हरापन – मन की खुशियाँ

अक्खड़पन – रुखाई, कठोर होना

जुझारूपन – संघर्ष करने की प्रवृत्ति

प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक ' आरोह ' भाग -1 में संकलित 'आओ मिलकर बचाएँ ' शीर्षक कविता से ली गई है। कवयित्री निर्मला पुतुल जी के द्वारा रचित कविता 'आओ मिलकर बचाएँ ' मूलतः संथाली भाषा में लिखित है, जिसका हिन्दी अनुवाद श्री अशोक सिंह ने किया है। कवयित्री निर्मला पुतुल जी उक्त पंक्तियों के माध्यम से अपने साधारण ग्राम्य परिवेश को दोष रूपी शहरी सभ्यता से बचाने का आह्वान् कर रही हैं।

व्याख्या— इन पंक्तियों के द्वारा कवयित्री कहती हैं कि नगरीय संस्कृति के प्रभुत्व के कारण इस क्षेत्र के लोगों की दिनचर्या ठंडी

© JCERT not to be republished

अर्थात् धीमी पड़ती जा रही है । लोगों के जीवन में जो गर्माहट रूपी उत्साह हुआ करते थे, वो कहीं न कहीं धूमिल पड़ने लगे हैं। आगे कवयित्री कहती हैं कि मन का हरापन भी विलुप्त हो गया है अर्थात् मन का सुकून और उत्साह छिन गया है । दिल भोलेपन से अब कठोरता का परिचायक बन गया है । अब हमारे व्यवहार में वो मासूम देहातीपन नहीं रह गया, जिसके वजह से हम जाने जाते थे और न ही संघर्ष करने की क्षमता व जुझारूपन हममें शेष है ।

विशेष—

- **'गर्माहट' शब्द का प्रयोग उत्साह के लिए हुआ है।**
- **'हरापन' शब्द का प्रयोग मन का सुकून के लिए हुआ है।**
- **आदिवासी समाज के भोलेपन का चित्रण हुआ है।**
- **आदिवासी समाज के संघर्ष की प्रवृति का चित्रण हुआ है।**

काव्यांश 3

भीतर की आग
धनुष की डोरी
तीर का नुकीलापन
कुल्हाड़ी की धार
जगंल की ताज़ा हवा
नदियों की निर्मलता
पहाड़ों का मौन
गीतों की धुन
मिट्टी का सोंधापन
फसलों की लहलहाहट

शब्दार्थ:-

आग – गर्मी

निर्मलता – पवित्रता

मौन – चुप्पी, स्तब्धता

सोंधापन – मिट्टी की खुशबू

लहलहाहट – लहराना

प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह भाग -1' में संकलित 'आओ मिलकर बचाएँ ' शीर्षक कविता से ली गई है। कवयित्री निर्मला पुतुल जी के द्वारा रचित कविता 'आओ मिलकर बचाएँ' मूलत: संथाली भाषा में लिखित है, जिसका हिन्दी अनुवाद श्री अशोक सिंह ने किया है । कवयित्री निर्मला पुतुल जी उक्त पंक्तियों के माध्यम से अपने साधारण ग्राम्य परिवेश को दोष रूपी शहरी सभ्यता से बचाने का आह्वान् कर रही हैं ।

व्याख्या— इन पंक्तियों के द्वारा कवयित्री कहती हैं कि हमें अपनी मूल पहचान नहीं भूलना चाहिए । अपने अस्तित्व को ज़िंदा रखने की भूख हममें सदा बरकरार रहनी चाहिए । संघर्ष करने की प्रवृत्ति के साथ - साथ अपने पारम्परिक हथियार जैसे - धनुष, तीर, कुल्हाड़ी इत्यादि धरोहरों को बचाए रखें, ताकि हमारी भावनाएँ और संस्कृति का स्वर हमेशा गूंजामान होता रहे। आगे कवयित्री कहती हैं कि हम अपने वनों की अंधाधुंध कटाई से बचाएँ, ताकि ताज़ा हवा

© JCERT not to be republished

हमें मिलती रहे ।नदियों की निर्मलता को बनाएँ रखें । पहाड़ों का मौन रहना, पारम्परिक गीतों की धुन, मिट्टी का सोंधापन और फसलों की लहलहाहट इत्यादि हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, जिसे पल भर के लिए भी खोना, मानो अपना वजूद खो देना है । हमें अपनी पहचान और प्रकृति के प्रति गहरा अनुराग को हमेशा जीवित रखना चाहिए । यही हमारे धरोहर हैं।

विशेष —

- **प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा आदिवासी स्मिता की मूल पहचान है।**
- **पारंपरिक हथियार आदिवासी समाज के मूल धरोहर हैं।**
- **पारम्परिक गीतों के धुन, मिट्टी का सोंधापन और फसलों की लहलहाहट इत्यादि आदिवासी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं।**
- **नदियों की निर्मलता बरकरार को रखने की आवश्कता है।**

काव्यांश 4

नाचने के लिए खुला आँगन
गाने के लिए गीत
हँसने के लिए थोड़ी-सी खिलखिलाहट
रोने के लिए मुट्ठी भर एकांत
बच्चों के लिए मैदान
पशुओं के लिए हरी-हरी घास
बूढ़ों के लिए पहाड़ों की शांति

शब्दार्थ:-

खिलखिलाहट – खुलकर हँसना

मुट्ठी भर – थोड़ा-सा

एकांत – अकेलापन, तन्हाई ।

प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक ' आरोह ' भाग -1 में संकलित 'आओ मिलकर बचाएँ ' शीर्षक कविता से ली गई है। कवयित्री निर्मला पुतुल जी के द्वारा रचित कविता 'आओ मिलकर बचाएँ ' मूलत: संथाली भाषा में लिखित है, जिसका हिन्दी अनुवाद श्री अशोक सिंह ने किया है । कवयित्री निर्मला पुतुल जी उक्त पंक्तियों के माध्यम से अपने साधारण ग्राम्य परिवेश को दोष रूपी शहरी सभ्यता से बचाने का आह्वान् कर रही हैं ।

व्याख्या— इन पंक्तियों के द्वारा कवयित्री कहती हैं कि धीरे-धीरे बढ़ती जनसंख्या और विकास के कारण घर छोटे व सीमित होते जा रहे हैं । नाचने के लिए पर्याप्त मात्रा में खुला आँगन नहीं बचा है और न ही अब हमारी संस्कृति की विशेषता बताने वाली गीतों का अस्तित्व बाकी है । कवयित्री कहती हैं कि हँसने के लिए थोड़ी-सी खिलखिलाहट की आवश्यकता है और रोने के लिए मुट्ठी भर एकांत की दरकार । लेकिन शहरी ज़िंदगी जीने की होड़ के कारण लोगों के पास इतनी भी फुर्सत कहाँ है ? बस दिखावे के कारण तनाव और पीड़ा को अपने जीवन रूपी थाली में परोसे जा रहे हैं । कवयित्री कहती हैं कि बच्चों के लिए खेल का मैदान, पशुओं के लिए हरी-हरी घास और बूढ़ों के लिए पहाड़ों की शांति जैसे वातावरण को वापस पाने के लिए हमें सामूहिक प्रयत्न करने की आवश्यकता है ।

© JCERT not to be republished

विशेष—

- **बढ़ती जनसंख्या और विकास के कारण घर छोटे व सीमित होते जा रहे हैं।**
- **आदिवासी संस्कृति की विशेषता बताने वाली गीतों का अस्तित्व खतरे में है।**
- **दिखावे के कारण तनाव और पीड़ा को अपने जीवन रूपी थाली में परोसे जा रहे हैं।**
- **उक्त पंक्तियों की भाषा सरल, सहज एवं सुबोध है।**

काव्यांश 5

और इस अविश्वास-भरे दौर में

थोड़ा-सा विश्वास

थोड़ी-सी उम्मीद

थोडे-से सपने

आओ, मिलकर बचाएँ

कि इस दौर में भी बचाने को

बहुत कुछ बचा हैं

अब भी हमारे पास।

शब्दार्थ:-

अविश्वास - दूसरों पर विश्वास न करना

दौर - समय

सपने - इच्छाएँ

प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक ' आरोह ' भाग -1 में संकलित 'आओ मिलकर बचाएँ ' शीर्षक कविता से ली गई है। कवयित्री निर्मला पुतुल जी के द्वारा रचित कविता 'आओ मिलकर बचाएँ ' मूलत: संथाली भाषा में लिखित है, जिसका हिन्दी अनुवाद श्री अशोक सिंह ने किया है। कवयित्री निर्मला पुतुल जी उक्त पंक्तियों के माध्यम से अपने साधारण ग्राम्य परिवेश को दोष रूपी शहरी सभ्यता से बचाने का आह्वान कर रही हैं।

व्याख्या— इन पंक्तियों के द्वारा कवयित्री कहती हैं कि आज जब हर तरफ़ अविश्वास का दौर है, ऐसी स्थिति में भी हमारे पास बचाने को बहुत कुछ बाकी है। बस हमें थोड़ा-सा विश्वास, थोड़ी-सी उम्मीदें और थोड़े-से सपने अपने अंतःकरण में जीवित रखना होगा और हम सबको मिलकर अपनी सभ्यता व संस्कृति को बचाने का सामूहिक प्रयास करना होगा।

विशेष—

- **आज जब हर तरफ़ अविश्वास का दौर है, ऐसी स्थिति में भी आदिवासी समाज में बचाने को बहुत कुछ बाकी है।**
- **सबको मिलकर आदिवासी सभ्यता व संस्कृति को बचाने का सामूहिक प्रयास करना होगा।**
- **उक्त पंक्तियों की भाषा सरल, सहज एवं सुबोध है।**
- **स्वाभाविक तौर पर छंदमुक्त पंक्तियाँ हैं।**

© JCERT not to be republished

अभ्यास कविता के साथ

प्रश्न–1 'माटी का रंग' प्रयोग करते हुए किस बात की ओर संकेत किया गया है ?

उत्तर– प्रस्तुत कविता में प्रयुक्त 'माटी का रंग' से कवयित्री का तात्पर्य शहरी संस्कृति से परे अपने झारखंड राज्य के संथाल परगना अर्थात् आदिवासी ग्राम्य परिवेश के रीति-रिवाज़ों कों सुंदर गुणों से सुसज्जित रहना है । कवयित्री के अनुसार, लोगों में उनके मूल अस्तित्व की गतिविधियाँ शामिल हों और स्वभाव में झारखंडीपन का वर्चस्व दिखाई दे ।

प्रश्न– 2 भाषा में झारखंडीपन से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर– प्रस्तुत कविता के अनुसार, झारखंडीपन से अभिप्राय झारखंड के स्थानीय लोगों के नैसर्गिक स्वभाव, भाषा और रहन-सहन से है । उक्त स्वभाव को ही शहरी संस्कृति धीरे-धीरे नष्ट कर रही है, जिसके विरोध में कवयित्री अपने संथाल व झारखंड राज्य के लोगों से आह्वान करती हैं कि वे अपनी मूल संस्कृति की तरफ़ लौट आएँ और अपनी धरोहर सुरक्षित कर लें ।

प्रश्न–3 दिल के भोलेपन के साथ-साथ अक्खड़पन और जुझारूपन को भी बचाने की आवश्यकता पर क्यों बल दिया गया है ?

उत्तर– देखा जाए तो दिल का भोलापन सरल व सहज स्वभाव की ओर इशारा करता है । जिस तरह से शहरी प्रभुत्व के कारण गाँव के साधारण लोग गलत दिशा में अग्रसर हो गए हैं, वह शुभ संकेत नहीं है । इसलिए कवयित्री चाहती हैं कि हमारे गाँव के भोले -भाले आदिवासी बंधु प्रवृत्ति से अक्खड़ व जुझारू भी बने, ताकि वे अपनी बुराईयों को जड़ से उखाड़ फेंकने में कामयाब हों और कठिन वक़्त में अपनी संस्कृतियों की सुरक्षा हेतु तटस्थ रह सकें । इसलिए प्रस्तुत कविता में दिल के भोलेपन के साथ-साथ अक्खड़पन और जुझारूपन को भी बचाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है ।

प्रश्न –4 प्रस्तुत कविता आदिवासी समाज की किन बुराइयों की ओर संकेत करती है ?

उत्तर– प्रस्तुत कविता आदिवासी समाज की निम्नलिखित बुराइयों की ओर संकेत करती है---

- आदिवासियों की संस्कृति व जीवन पर शहरी वातावरण का वर्चस्व बढ़ गया है । फलस्वरूप, वे अपना मूल पहचान गँवाते जा रहे हैं ।
- आदिवासी समाज मादक पदार्थों की तरफ़ अत्यधिक झुका है, जिसके कारण उनका शोषण हो रहा है ।
- आदिवासी समाज में अब भी शिक्षा का अभाव है ।
- धनुष-बाण, तीर-कमान इत्यादि जैसे अपने मूल धरोहरों से वे वंचित हो गए हैं ।

© JCERT not to be republished

- कहीं न कहीं वे आत्मविश्वास की कमी से जूझ रहे हैं।

प्रश्न- 5 इस दौर में भी बचाने को बहुत कुछ बचा है --- से क्या आशय है ?

उत्तर- प्रस्तुत कविता के अनुसार, इस दौर में भी बचाने को बहुत कुछ बचा है --- से कवयित्री का आशय यह है कि आज आदिवासी समाज के पिछड़ापन का कारण उनके अंदर नकारात्मकता का समावेश है तथा शहरी कुसंस्कृतियों ने उनके अंदर के शुद्धीकरण को तोड़ने का काम किया है, फिर भी कवयित्री को लगता है कि अब भी आदिवासियों की एकता संगठित है। अब भी उनकी संस्कृतियाँ पुनः जी उठने को व्याकुल है। इसलिए कवयित्री कहती हैं कि आज जब हर तरफ़ अविश्वास का दौर है, ऐसी स्थिति में भी हमारे पास बचाने को बहुत कुछ बाकी है। बस हमें थोड़ा-सा विश्वास, थोड़ी-सी उम्मीदें और थोड़े-से सपने अपने अंतःकरण में जीवित रखना होगा और हम सबको मिलकर अपनी सभ्यता व संस्कृति को बचाने का सामूहिक प्रयास करना होगा।

प्रश्न-6 निम्नलिखित पंक्तियों के काव्य-सौन्दर्य को उद्घाटित कीजिए ---

(क) ठंडी होती दिनचर्या में

जीवन की गर्माहट

(ख) थोड़ा - सा विश्वास

थोड़ी -सी उम्मीद

थोड़े —से सपने

आओ, मिलकर बचाएँ

उत्तर: काव्य- सौंदर्य को दो भागों में विभक्त किया जाता है —

1 भाव - सौंदर्य 2 शिल्प - सौंदर्य

भाव सौंदर्य (क) — इन पंक्तियों के द्वारा कवयित्री कहती हैं कि नगरीय संस्कृति के प्रभुत्व के कारण इस क्षेत्र के लोगों की दिनचर्या ठंडी अर्थात् धीमी पड़ती जा रही है। लोगों के जीवन में जो गर्माहट रूपी उत्साह हुआ करते थे, वो कहीं न कहीं धूमिल पड़ने लगे हैं।

शिल्प- सौंदर्य—

- प्रस्तुत कविता में कवयित्री ने दिनचर्या में आई उदासीनता को दूर करने के लिए 'गर्माहट' शब्द का लाक्षणिक प्रयोग किया है।
- उक्त पंक्ति की भाषा सरल, सहज एवं सुबोध है।
- स्वाभाविक तौर पर छंदमुक्त पंक्तियाँ हैं।
- प्रयोग किए गए शब्द प्रतीकात्मक हैं।

भाव सौंदर्य (ख) इन पंक्तियों के द्वारा कवयित्री कहती हैं कि आज जब हर तरफ़ अविश्वास का दौर है, ऐसी स्थिति में भी हमारे पास बचाने को बहुत कुछ बाकी है। बस हमें थोड़ा-सा विश्वास, थोड़ी-सी उम्मीदें और थोड़े-से सपने अपने अंतःकरण में जीवित रखना होगा और हम सबको मिलकर अपनी सभ्यता व

© JCERT not to be republished

संस्कृतिको बचाने का सामूहिक प्रयास करना होगा ।

शिल्प-सौंदर्य—

- थोड़ा-सा, थोड़ी-सी, थोड़े—से तीनों शब्दों के प्रयोग से प्रस्तुत पंक्तियों में एक विशेष अभिव्यक्ति का प्रयोग हुआ है।
- उक्त पंक्ति की भाषा सरल, सहज एवं सुबोध है ।
- प्रेरणात्मक पंक्ति है, जिससे लोगों को आगे बढ़ने का आत्मबल मिले ।

प्रश्न -7 बस्तियों को शहर की किस आबो-हवा से बचाने की आवश्यकता है ?

उत्तर- प्रस्तुत कविता के अनुसार, बस्तियों को शहर की अपसंस्कृति के प्रभाव से बचाने की आवश्यकता है । कवयित्री आदिवासियों से आह्वान करती हुई कहती हैं कि आओ, हम सब मिलकर अपनी बस्तियों को शहरी वातावरण के दुष्प्रभाव से बचा लें तथा अपनी संस्कृति को सुरक्षित कर लें । अर्थात् आज तक शहरी सभ्यता ने सिर्फ हमारी बस्तियों या हम पर विभिन्न प्रकार का शोषण किया है । शहरीकरण का प्रभाव, सुंदर, स्वच्छ व हरियाली युक्त वातावरण को दिन-प्रतिदिन नष्ट कर रहा है । इन सारी चीज़ों से कवयित्री बस्तियों को बचाना चाहती हैं ।

© JCERT not to be republished

कविता के आस — पास

प्रश्न - 1 आप अपने शहर या बस्ती की किन चीज़ों को बचाना चाहेंगे?

उत्तर: मैं अपनी बस्ती के वास्तविक मूल्यों, प्रकृति एवं सामाजिक विशेषताओं की रक्षा करना चाहुँगा। अंधानुकरण की इस दौड़ में बिखरती अपनी संस्कृति की रक्षा करना चाहुँगा, जिसमें अपनी भाषा, बोली, खान -पान, रहन -सहन के साथ -साथ सामाजिक गतिविधियाँ सम्मिलित रहेंगी।

प्रश्न - 2. आदिवासी समाज की वर्तमान स्थिति पर टिप्पणी करें।

उत्तर: कुछ हद तक यह बात सत्य है कि वर्तमान समय में आदिवासी समाज में कुछ उन्नति हुई है, फिर भी आदिवासी समाज आज स्वयं को आधुनिक बनाने के चक्कर में अपनी मौलिकता खो रहा है। स्वयं को पिछड़ा मानकर हीनभाव से ग्रस्त हो वे अपनी धरती की गंध भूलते जा रहे हैं। आज भी वहाँ शिक्षा और कुरीतियों के कारण पीढ़ियाँ बिगड़ रही हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

1. कवयित्री ने किस समाज को बेबाकी से प्रकट किया है ?

(क) मुंडा

(ख) भील

(ग) कोंकणी

(घ) संथाली

उत्तर- (घ) संथाली

2. यह दौर कैसा है ?

(क) विश्वास भरा

(ख) अविश्वास भरा

(ग) विद्रोह भरा

(घ) विध्वंस भरा

उत्तर- (ख) अविश्वास भरा

3. कवयित्री ने किस के जीवन के अनछुए पहलुओं से परिचय कराया है ?

(क) आदिवासी जीवन के

(ख) ग्रामीण जीवन के

(ग) शहरी जीवन के

(घ) पहाड़ी जीवन के

उत्तर- (क) आदिवासी जीवन के

4. नाचने के लिए कैसे आँगन की आवश्यकता है ?

(क) सीधे

(ख) छोटे

(ग) टेढ़े

(घ) खुले

उत्तर- (घ) खुले

5. 'धनुष की डोरी' किसकी प्रतीक है ?

(क) शिकार की

(ख) साहस की

(ग) वीरता की

(घ) युद्ध की

उत्तर- (क) शिकार की

6. रोने के लिए क्या चाहिए ?

(क) कठोरता

(ख) मुट्ठी भर एकांत

(ग) शांत घर

(घ) खुला छत

उत्तर- (ख) मुट्ठी भर एकांत

7. बूढ़ों को किस चीज़ की आवश्यकता है?

(क) पैसे की

© JCERT not to be republished

(ख) शांति की

(ग) वन की

(घ) प्यार की

उत्तर- (ख) शांति की

8. लेखिका के अनुसार इस कविता की भाषा में कौन-सा पन है ?

(क) झारखंडी

(ख) संथाली

(ग) बागड़ी

(घ) मारवाड़ी

उत्तर- (क) झारखंडी

9. प्रकृति के विनाश और विस्थापन के कारण किसका समाज संकट में है?

(क) आदिवासियों का

(ख) शहरवासियों का

(ग) गाँववासियों का

(घ) कस्बेवासियों का

उत्तर- (क) आदिवासियों का

10. आज के युग में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर क्या करने लगा है?

(क) अविश्वास

(ख) विश्वास

(ग) कुछ नही

(घ) इनमें से कोई नही

उत्तर- (क) अविश्वास

11. कवयित्री मानव को कैसे रहने का आग्रह करती है?

(क) सभी से दूर रहने का

(ख) सभी से अलग रहने का

(ग) मिल-जुलकर रहने का

(घ) कोई आग्रह नही करती

उत्तर- (ग) मिल-जुलकर रहने का

12. आज के युग में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर क्या करने लगा है?

(क) अविश्वास

(ख) विश्वास

(ग) कुछ नही

(घ) इनमें से कोई नही

उत्तर- (क) अविश्वास

13. आदिवासी किस पर निर्भर करते है?

(क) पंचायत पर

(ख) सरकार पर

(ग) समाज पर

(घ) प्रकृति पर

उत्तर- (घ) प्रकृति पर

© JCERT not to be republished

14. प्रकृति के विनाश के कारण कौन अपना आस्तित्व खोते जा रहे हैं?

(क) लोग

(ख) कवि

(ग) लेखक

(घ) आदिवासी

उत्तर- (घ) आदिवासी

15. शहर का वातावरण कैसा होता है?

(क) शुद्ध

(ख) प्रदूषित

(ग) अच्छा

(घ) बेकार

उत्तर- (ख) प्रदूषित

16. प्रस्तुत अवतरण में कवयित्री ने किसके प्रति चिंता उजागर की है ?

(क) अपने प्रति

(ख) देश के प्रति

(ग) शिक्षा के प्रति

(घ) संथाली के प्रति

उत्तर- (घ) संथाली के प्रति

17. कवयित्री किसे अमर्यादित होने से बचाने का आह्वान करती हैं?

(क) अपने परिवार को

(ख) अपने समाज को

(ग) अपनी संस्कृति को

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (ग) अपनी संस्कृति को

18. शहरी संस्कृति के प्रभाव में आकर किन लोगों की दिनचर्या में ठहराव आ गया है?

(क) गरीब लोगों की

(ख) ग्रामीणों की

(ग) झारखंड के लोगों की

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (ग) झारखंड के लोगों की

© JCERT not to be republished